महजूर

की श्रेष्ठ कविताएं

जे. एण्ड के.
अकादमी ऑफ आर्ट, कल्चर एण्ड लैंग्वेजिज़
श्रीनगर

महजूर

महजूर की श्रेष्ठ कविताएं

(कविता संकलन)

रूपान्तरकार

डॉ० शिबन कृष्ण रैणा

जे० एण्ड के०

अकादमी ऑफ आर्ट, कल्चर एण्ड लैंग्वेजिज़ श्रीनगर।

MEHJOOR KI SRESHTH KAVITAYN

(A Collection of Poetry)

Translated into Hindi from Kashmiri

By

Dr. Shiban Krishan Raina

मूल्य : 14/- रुपये

Price : Rs. 14/-

प्रकाशक : जे० एण्ड के० अकादमी ऑफ आर्ट, कल्चर एण्ड लैंग्वेजिज, श्रीनगर।
प्रथम संस्करण : 500 प्रतियां (मार्च 1989)
मुद्रण : रोहिणी प्रिंटर्ज, कोट किशनचंद, जालन्धर (पंजाब)

पहली बात

महजूर सदी तकरीबात[1] लगभग पूरी की पूरी कल्चरल अकादमी के झंडे तले ही मनाई गई। 11 अगस्त, 1987 ई० यानि शायर की पूरी शताब्दी सालगिरह[2] पर अकादमी का आल इंडिया महजूर सेमिनार शुरू हुआ और अगस्त 1988 ई० को एक साल तक यह तकरीबात जारी रहने के बाद साहित्य अकादमी और कल्चरल अकादमी के सांझे इंतजाम[3] के तहत सेमिनार पर यह शताब्दी जशन[4] खत्म हो गया। इस दौरान महजूर पर और इसके मुतअल्लक[5] कई सेमिनार, कई संगीत सम्मेलन, कई रसाले शाया[6] हुए। महजूर का मकबरा तामीर[7] किया गया और इसकी शायरी और ज़िंदगी से मुतअल्लक एक नया उत्साह और जोश पैदा हो गया।

महजूर अगरचे[8] कश्मीर के मौजूदा काल के शोरा[9] में मुल्क भर में बहुत ही जाना पहचाना जाता है। लेकिन, हमारी राष्ट्रीय भाषा में उसका कोई अच्छा-सा तरजुमा[10] मौजूद नहीं था। रियास्त के गवर्नर श्री जगमोहन ने इसी साल कल्चरल अकादमी को अपने खास फंड से दस हज़ार रुपये की रकम दी ताकि वह महजूर के कलाम का अनुवाद हिंदी और अंग्रेज़ी में प्रकाशित कर सके। हमने इस दौरान अच्छे तर्जम:निगारों[11] की सेवा हासिल करने की कोशिश की है। चुनांचे श्री एस० के० रैणा का यह हिंदी तरजमा इस सिलसिले की पहली कड़ी है! हमें उम्मीद है कि इस छोटे से गुलदस्ते से हिंदी पाठकों और प्रेमियों तक शायरे-कश्मीर के फूल की पंखड़ियों जैसे कलाम की महक पहुँच सकेगी और वह एक ज़्यादा बड़े और ज़्यादा अच्छे तरजमा की कामना कर पाएंगे। खुद महजूर को यह तरीका पसंद लगता था।

वाव सुबहुक पोशि वथरन बागक्यन छकरान च्वपर्य,
कमदिव खिय श्याम पत्य सुलि बागरविरव इश्तिहार ॥

---

1. शताब्दी समारोह 2. जयन्ती 3. प्रबन्ध 4. समारोह 5. सम्बन्धी 6. प्रकाशित 7. निर्मित 8. यद्यपि 9. कविगण 10. अनुवाद 11. अनुवादकों।

(तरजमा—पुरवाई प्रभात की ही फूल की पंखड़ियां हर दिशा में बिखेर रही है। कामदेव तो शाम को ही पधारेगा। अलबत्ता उसके आने का शुभ समाचार इश्तिहार बांट कर पहले से ही दिया जा रहा है)

मुझे अफसोस है कि मैं हिन्दी तरजमे को नहीं पढ़ सका हूँ और इसलिए मुझे भी इसके उचित होने के सिलसिले में पाठकों की राय का इंतज़ार करना होगा। हाँ हम बहुत जल्द महजूर का तरजमा अंग्रेजी में भी पेश करेंगे।

मैं आखिर पर गवर्नर श्री जगमोहन का शुक्रगुजार हूँ कि उन्होंने हमें इस अहम काम के लिए उकसाया और हमारी हिम्मत बंधाई।

श्रीनगर   मुहम्मद यूसुफ टेंग
15 जनवरी, 1989 ई०   सैक्रेटरी

विषयानुक्रम

आस तेरी, प्रभु

आस तेरी, प्रभु, मुझे है
पथ सच्चाई का दिखाना तू,
अब और कब तक मैं रहूँ अनजान ?
सच-ज्ञान की मदिरा पिलाना तू।

सुन ले, प्रभु, मेरी दीन-याचना
मेरे ज़ख्मों पर मरहम लगाना तू,
हर पल, हर क्षण दयाभाव रखना
अभावों से मुझे सदा उबारना तू।

आलस्य, अपौरुष और अधीरता
रखना इनसे मुझे दूर ही त,
नवोत्साह, जोश और उमंगें
दिल में मेरे प्रभु भरना तू।

सुलाए जो कविता संसार को
कभी मुझ से न लिखवाना तू,
मृत पुनः जी उठे जिनसे,
गीत ऐसे मुझ से, प्रभु, गवाना तू।

जिन शब्दों से बहे नेह सरिता
मिटे मरुस्थल नफरत का
जन-जन में भावना प्रेम की जगे
ऐसी ज़ुबान, प्रभु, मुझे सिखाना तू।

पुष्पित किया, झुलाया मुझे, प्रभु
मधुमास के प्रथम पवन झकोरों से,
हेमंत की सूखी हवाओं से मुझे
अब जर्जरित न कर दना तू।

शबनम की तरह करूँ प्रतीक्षा
कब तक सूरज के उगने की,
कली-कुसुम की चटकारी संग
प्रभु, मुझे तुरन्त जगाना तू।

शक्ल मेरी है मनुज की
पर मनुजता से हूँ बेखबर,
ले न इम्तिहान, मनुजता न लजाए
वरदान ऐसा, प्रदान करना तू।

लोगों से हूं विरल और दूर
तभी नाम पड़ा 'महजूर',
अपने दूर-दूर रहे भले ही
पर मुझे छोड़ कर न जाना तू। ◘

विनय सुन ले

आया हूं दर पै तेरे, कर दूर दुःख तू मेरे,
सुन ले विनय दयालु, या रसूल मेरे, या रसूल मेरे।

ज्ञान का आलोक भर
दिल में मेरे मालिक तू,
बेड़ा तू पार लगा दे
या रसूल मेरे, या रसूल मेरे ।

मालिक है सकल सृष्टि का
शाहों का शाहंशाह है,
शोभा तू दोनों लोक की
या रसूल मेरे......... ।

रहमत का दरिया बहा
दीनों पर दया कर तू,
बलिहारी तेरे नाम की
या रसूल मेरे.........।

किए बहुत पाप हमने
नहीं जानते सच-झूठ क्या ?
दम्भ टूटा, दुःख विकसे
या रसूल मेरे.........।

धरती प्यासी जाने कब से
पाप जुल्म की आग लगी,
रहमत की बरसात कर दे
या रसूल मेरे.........।

दया दृष्टि तेरी हम चाहते
दूर कर प्रभु दुःख हमारे,
दर पै आया हूं लेकर उम्मीदें,
या रसूल मेरे.........।

बादामी आँखों से देख जरा
धुन छोड़ अब ख्वाब की,
देख आशिक की बेकरारी,
या रसूल मेरे.........।

तेरे चरणों की रज पर
मोहित कितने ही हुए
करता हूं निछावर प्राण मैं अपने
या रसूल मेरे.........। ▫

किसान का गीत

भाई मेरे
चिंता छोड़ अब,
मना खुशियाँ
जीवन ही है आज़ादी,
बहुत दिनों बाद मिलेगी
हमें आज़ादी।

ज़मीन जोतते थे
दस-के दस लगकर,
मात्र पानी पीकर गुज़र करने को
हो गये थे हम आदी,
बहुत दिनों बाद मिलेगी
हमें आज़ादी ।

कटाई के वक्त
एक-एक दाना लूट ले जाता
वह आततायी
जालिम, दुष्ट चकदार,
किसी ने न देखी
होती बर्बादी
जीवन ही है आज़ादी,
बहुत दिनों बाद मिलेगी
हमें आज़ादी ।

खत्म होगा
जोर-ज़ुल्म का ज़माना

नहीं चलेगी जमींदार की अब
सुनी है हमने यह खुशखबरी
जीवन ही है आज़ादी,
बहुत दिनों बाद मिलेगी
हमें आज़ादी।

उपजाएंगे जितना
सब होगा अपना,
दाने-दाने पर हक होगा हमारा,
बाज के पर काट डालेगा शिकारी
होगी दूर अंधेरगर्दी
जीवन ही है आज़ादी
बहुत दिनों बाद मिलेगी
हमें आज़ादी।

गुजारेंगे सुख से अब ज़िन्दगी
पहुँचेंगे न कष्ट किसी को भी
उगाएंगे फसलें
खूब अच्छी-अच्छी
जीवन ही है आज़ादी
बहुत दिनों बाद मिलेगी
हमें आज़ादी।

समय रहते 'महजूर'
कर रहा इशारा,
फैलेगी ज्योति, मिटेगा अंधेरा
बात सार की है यही
जीवन ही है आज़ादी
बहुत दिनों बाद मिलेगी
हमें आज़ादी।

यौवन–कुमार को प्रीत नहीं

कर्मलेख का क्या करूँ सखी,
उस यौवन कुमार को
उस मस्त-बेपरवाह को
तनिक भी मुझसे प्रीत नहीं।

न चाहा किसी ने, न माँगा किसी ने
जन्म लिया फिर भी इसी जग में
मेरे जन्म से दिल टूटे अपनों के भी
क्यों थी आई, जानें क्यों थी जन्मी ?
उस यौवन कुमार को मुझसे प्रीत नहीं।

दया कर मुझे पाला गया
कुदरत ने बख्शी चढ़ती जवानी
कष्ट खूब झेले मैंने
सदमें अनेक सहे
उस यौवन कुमार को मुझसे प्रीत······।

समझाया मुझे ममतामयी माँ ने
खाना पकाना सीख, बेटी
बावर्ची बन जा तू,
तभी छूट गयी अन्य विद्याएँ औ कलाएँ
उस यौवन कुमार को······।

रक्षा की मेरे रूप की
शील के शामयाने, धीरज की कनात ने,
लोलुप आँखें रहीं दूर ही
देख इस संगीन दीवार को
उस यौवन कुमार को······।

पराए किसी अनजान के
मढ़ दी गयी गले में मैं,
राय मेरी पूछी नहीं किसी ने
स्वीकारा सब कुछ, उफ़ न की
उस यौवन कुमार को......।

मैं लल-दीवानी[1] निकली बाजार से
शाह-हमदान की पड़ी मुझ पर नज़र
पर्दा करके तब सामने गई
मर्दे-खुदा उनको जानकर,
उस यौवन कुमार को......।

चंदहार गाँव में,
किसान के घर जन्मी[2]
किस्मत ने बनाया राजा की रानी,
वैभव में भी खुदा को न भूली,
उस यौवन कुमार को......।

नश्वर जगत् की मुझसे शोभा
संत, फकीर और देवता
सब के सब मेरे ही अंशक,
मेरे ही कारण सृष्टि की यह लीला
उस यौवन कुमार को......।

समय बेल पर खिली कली-सी मैं
फूल भी खिले, काँटे भी निकलें,
फूल मुरझाए पर रह गये काँटे
ग्लानि के मारे मैं हो गयी आधी
उस यौवन कुमार......।

---

१. कश्मीर की प्रसिद्ध संत-कवयित्री—ललद्यद।
२. कश्मीरी गीतकाव्य की प्रवर्तक—कवयित्री हब्बाख़ातून।

दु:ख दर्द अनेक मैं
चिरकाल से सहती आई,
प्रेम को सहलाया, गोद में डुलाया
आवाज़ देकर बुलाऊँ 'महजूर' की तरह
उस यौवन कुमार......।

हल हमारा

उपकार तेरे याद हैं हमें
सुंदर-सुघड़ तू हल है हमारा,
देख तुझे मुदित हम सब होते
सुंदर सुघड़ तू हल है हमारा।

चंदनी-देह, तीरकमान सरीखा रूप
स्वर्ग की हूर शोभा अनूप
मिल जाएँ मिट्टी में तेरे वैरी
सुंदर-सुघड़ तू हल......।

पुष्पवाटिका का तू पुष्प मनोहर
सकल सृष्टि का महाराजा है,
तेरे दम से जग में है हलचल
सुंदर सुघड़ तू हल......।

मन मुदित किसान का होता
भार जब वह तेरा है ढ़ोता
बाँहों में झुलाता सिर पर बिठाता
सुंदर-सुघड़ तू हल......।

जिस घर में रहे तू जमकर
भला रोजी रूठे वहाँ क्योंकर ?
तेरे बिन कुछ सोचना बड़ी नादानी
सुन्दर सुघड़ तू हल......।

जिस पथ पर तू आगे बढ़े
मोतियों के वहाँ ढेर लुटें,

मिट्टी में उपजावे लाल बहुतेरे
सुंदर-सुघड़ तू हल......।

जानें कितने वीर हिन्दुस्तानी
आए तेरी रक्षा करने,
रखा बरकरार तेरा वकार
सुंदर-सुघड़ तू हल......।

सरकारी भवनों पर तू लहराये
आलोकित हो कार्तिक-चंद समान
ऊर्ध्व-स्थान पर चमचम चमके
सुन्दर-सुघड़ तू हल......।

तेरी खातिर शेरवानी[1] ने जान गँवाई
अविरल दौड़ा तुझे बचाने को,
याद रखना इसकी कुर्बानी
सुन्दर-सुघड़ तू हल......।

तेरी तस्वीर है कौम की निशानी
तुझे स्वीकारा है हम सबने,
सीनों पर हमारे जगह है तेरी
सुन्दर-सुघड़ तू हल......।

'महजूर' जानता है तुझे कब से
परिचय दोनों का है बहुत पुराना
तेरे सौभाग्य पर उसे खुशी है
सुन्दर-सुघड़ तू हल......। □

---

1. **शहीद शेरवानी**—कश्मीर का प्रसिद्ध देशभक्त ।

कारवाँ और मंजिल

आज
बाग के पक्षियों में
कुछ नया ही शोर है
पिंजरे में सोन चिरैया ने
कुछ नया ही राग
छेड़ा है—
चले हैं हम खूब
थके हैं हम खूब
पर
कारवां पहुंचा नहीं अभी तक
मंजिल पर है ।
क्या ख़बर
खराबी किस्मत में है, या फिर
खामी हमारे रहबरों में है ?
गुजारे हैं जिन्दगी के
अधिकांश दिन इस पिंजरे में
अगरचे,
उड़ान भरने की कूवत
अब भी इन परों में
बहुत बाकी है ।
हाय अफसोस !
नहीं है आज के आशिकों में
सरफरोशी का जज्बा बाकी,
नहीं है आज के दिलबरों में
दिलेरी की अद्भत शान बाकी ।

रहा है हमेशा ही
जान और माल का डर,
दिलेरी और हिम्मत तो
शेष है बस
निर्धन के अन्दर ।
पुरुष सयाने
ज्यादातर
छिपकर रहते हैं
लोक से दूर,
तभी एकांत सरोवर में
खिलते हैं कमल
अक्सर ।
स्वाभिमान को तू
रख कायम
जमाने में,
बस, इसी रत्न की
कमी 'महजूर'
आज हमारे
कवियों में है ।

दर्द का संगीत

मधुबाले, किया बहुत अधीर
तूने मुझे,
अब मदिरा पिला
कुछ ऐसी,
भर जाए
इस व्याकुल मन में
दर्द का संगीत और
बेचैनी।
सुबह की बयार
बगीचे में जो बही
बुलबुल के लिये लाई
खुशियां बेहिसाब, और
मालिक के लिये
चटकते गुलाब।
मगर
रीते प्याले की तरह
पानी में घूमता रहा भंवर
रात-दिन,
दरिया ने दिया नहीं उसे
एक भी कतरा पानी।
(दोस्त मेरे)
माँगने और मनाने का
दौर हो चला है समाप्त,
दौर नया आया है अब—
होगा जिसकी भुजाओं में दम

विजय-किरीट बंधेगा उसी के।
उमंग-उत्साह
जोश और बेचैनी
होंगे पैदा जब दिलों में हमारे
इन्कलाब होगा तब
इन्कलाब के हैं ये
लक्षण सारे।
(अन्याय का आलम देखो)
पहले लुटे दादा मेरे
अब मैं भी हूं लुट रहा,
माल ले गये
जान भी ले रहे हैं,
देकर अहंकार पै धार
तेज हुए हैं
जुल्म के औज़ार
(दोस्त मेरे फिक्र न कर)
वक्त पड़ने पर
जुल्म की कैंची से ही
कटेंगी
गुलाम की ये जंजीरें।
लाखों लोग तब
देख कर बाग को
होंगे पुलकित,
खिलेंगे फूल
चहकेंगी बुलबुलें
उजड़ेंगे घर भी कइयों के।
लिप्त रहे स्वार्थ में कुछ लोग
मुल्क की आज़ादी के खिलाफ—
वक्त जब प्रभावित करेगा,
कैसे समझाएंगे

आने वाली पीढ़ियों को वे
पड़ेगा मुश्किल
देना जवाब !
दूर हो जा एक तरफ
मेरे कौम के बाग का
दुश्मन है तू ।
सींचना है मुझे पेड़ों को
पानी बहने लगा है अब
हमारी नदियों में ।
हवा गुलों को है हँसाती
'महजूर' दिलों को है जगाता,
दोनों हैं इस बात से बेखबर
पाप क्या और पुण्य क्या ? □

होशियार हो जा

भूखे पेट सोने वाले
रे मजदूर
छोड़ दे
अब यह काहिली,
हो जा होशियार,
उठ, हो जा खड़ा
अपने पाँव पर।
जुल्म ने
बनाया है तुझे
अपंग-लाचार।
अभावों ने तुझे
है अकिंचन बनाया
उठ, जाग, और
जरा होश संभाल।
कब तक जुल्म और सख़्ती
सहता रहेगा तू,
इन्कलाब का सूरज
हुआ है उदित
आकाश की ओर
तू निहार।
उजड़ा बाग
खिलेगा दोबारा
संदेश लायी है यह
नव बहार।

उठ, रिवाजों और रहस्यों की
पुरानी जंजीरों को
तोड़,
छोड़, डर
कूद जा मैदान में
बनके शाह सवार।
जी-जान खटा कर
पसीना बहा कर
अमीरों पै तूने
सोना मढ़ा,
मुश्किल पड़ने पर जब
माँगे पैसे
तो भगाया उन्होंने डण्डा दिखा कर
रे मजदूर साथी !
रे किसान साथी !
हाथ से हाथ मिलाकर
बढ़ो आगे,
ले लो हक सारे अपने
यह समय
माँगने का नहीं,
मनाने का भी नहीं।
दुनिया की ये दौलत सारी
सब है तुम्हारी—
जमीन तुम्हारी
राज तुम्हारा,
है यह ताज भी तुम्हारा
कुल, धर्म और रंगरूप में
न फर्क करना साथी
मेहनतकश मजदूरों की
होती है बस एक ही जाति।
सात साल पहले कही थी

'महजूर' ने जो बात
सच निकली है वह आज
हेमन्ती हवाओं से
हुए धराशाही सरमायादार
पीले पत्तों की तरह ।
दौर है आया
न्याय और सत्य का
चला गया अब दौर
जोर और जुल्म का,
मिट गयी लेनदारी
तैयार हो रही है
दुनिया नई ।
नई दुनिया
बसानी है तुझे
बसाने का सामान
तलाश तू,
नये दौर में
होगा तू
सारी गतिविधियों के
केन्द्र में ।
वक्त ने शोषण
खूब किया
अब खबरदार
रहना तू
खत्म होगी अवश्य सरमायादारी
न रहेगी यह जागीरदारी । □

रे गुलेलाला !

लाला, लाला रे गुलेलाला[1] !
हाल अपने दिल का
कर तू इजहार !
सीने पर दाग़ लेकर
आया तू जहाँ से
रे बाल गोपाल !
क्या वहाँ भी सब-के-सब
हैं दाग़दार ?
विकलता से मुक्त
शान्ति से युक्त था, वह संसार,
भौतिकता से परे
वहाँ तो था सुख-चैन, और
मन का पूरा करार !
फिर
तेरे कोमल हृदय को
कौन-सा यह हादसा
दे गया वेदना अपार ?
वहाँ भी, यहाँ की तरह ही
है अव्यवस्था और अंधकार ?
वहाँ भी है
'यंबरज़ल' 'मसवल'
गुल और गुलज़ार ?
है वहाँ भी बुलबुल को
फूलों की लगन ?

---

1. लाल रंग का पुष्प-विशेष जिसकी पँखुड़ियों के बीच में दाग होता है ।

या
वहाँ भी
खत्म हो रही है बहार ?
वहाँ भी इन्सान
इन्सान को मारने के लिये
बना रहा है हथियार ?
और
औरतों, मासूम बच्चों पर
कर रहा बमबार ?
वहाँ भी हैं
कब्रिस्तान और मरघट
'मलखाह' 'नूरबाग', 'दानामज़ार'[1]
और इन सब के ठेकेदार ?
वहाँ भी है
व्यवस्था कंट्रोल की गोलमोल
और वस्तुओं का चोर-बाज़ार ?
वहाँ भी है
पक्षपात सामान बाँटने में
और इस लोक जैसे धूर्त राशनदार ?
वहाँ भी
अकिंचन की
कोई इज्जत नहीं
और सिद्धान्तहीन-पाखण्डी
कहलाते हैं इज्जतदार ?
वहाँ भी हैं
काश्तकार, जमींदार
और बड़े-बड़े चकदार ?
वहाँ भी निठ्ठलों में
बँटती हैं नियामतें
और मेहनतकशों को
फाके और अत्याचार ?

---

1. श्रीनगर में स्थित विभिन्न कब्रिस्तान ।

वहाँ भी निर्धन हैं कहलाते
मुजरिम-गुनहगार, और
साफ छूट जाते हैं मालदार ?
वहाँ भी
दुर्बल-पीड़ित कहलाते हैं झूठे,
सत्यवादी कहलाते
पूंजीपति मक्कार ?
वहां भी कैद है किया जाता
सच्चों को
और राज करते
वाचाल और तेज़-तर्रार ?
(होते जो मोटर कार में सवार)
वहाँ भी
न्याय के नाम पर
लुटते हैं मुलज़िम
और उनके नातेदार ?
वहाँ भी
पिटते हैं बेगुनाह
और उनके साथी-रिश्तेदार ?
वहाँ भी करता है ज़ालिम
दमन कमजोरों का, और
उनके पक्षधरों के साथ
करता है दुराचार ?
वहां भी विद्वान-पंडित
शोषक को हाथ जोड़
कहते हैं अपना दिलदार ?
वहां भी ज्ञानीजन
कहते हैं दिन को रात
और झाड़ियों को देवदार ?
वहाँ भी 'महजूर' दूर बैठ कर
फेंकते हैं मुर्गियों को
मोती-दाने ये निर्लज्ज चाटुकार ?

बाग की पहचान

क्या देख रहा
इन फूल-पत्तियों को ?
पैदाकर मन में तू
अपने बाग की
पहचान।
तू ही बाग
तू ही बागवान,
तू पैदाकर मन में
अपने बाग की
पहचान।
शरीर तेरा यह बाग
दिल सरोवर, तो
फव्वारा दिमाग,
आँख पुष्प
तो बुलबुल तेरी ज़बान,
पैदाकर मन में तू......।
बाग में खिले हैं तेरे
विभिन्न रंग
ग्रहण कर रंग ऐसा
होवे जो कभी न मैला,
पक्के रंग से
रंग दे तू,
अपने परिधान
पैदा कर मन में......।
बाग में तेरे
खिली है 'यम्बरजल'[1]

1. पुष्प-विशेष

किसी की प्रतीक्षा में
बिछाएँ हैं उसने नयन
नत-नयनों से देख रही है नीचे
चार का रखती है ध्यान,
पैदाकर मन में......।
बाग में तेरे
खिली है 'मसवल'
मदिरा के घूँट पीकर भी
बहक न जाना,
होश अपने
संभाल कर रखना
करके सुरापान
पैदाकर मन में
बाग में तेरे......।
खिले हैं, सूरजमुखी
आकाश की धरा का
है यह प्रतिदान,
इस सुंदर रूप
बढ़ा तू प्रीत का
सामान
पैदाकर मन में......।
उदित होगा
जब सूरज नये लोक का
तो छितराएगा प्रकाश
सर्वप्रथम
तेरे ही दालान पर,
बाद में होगी
शेष दुनिया
दृश्यमान
पैदाकर मन में......।
ऊर्ध्व स्थान पर
शोभित है तेरा मकान,

पर्वत पर लगे
ज्यों गुले-लाला,
पगों पर है तेरे यह
हिन्दुस्तान,
पैदाकर मन में......।

विश्व के
रूप-पारखी ये सारे
सब के सब
तेरे हैं दीवाने,
करते है तुझे सम्पन्न
दूर-दूर से आकर
करते हैं तेरा
गुणगान
पैदाकर मन में......।

अब धीरे-धीरे
ये बाज़ सारे
हो जायेंगे
मटियामेट,
चहकेगी फिर बुलबुल
गायेगी कोयल,
स्वर्ग से होड़ करेगा
तेरा यह
गुलिस्तान
पैदाकर मन में......।

इस बाग का 'महजूर'
तू है 'बुलबुल'[1]
बिन घोंसले के
क्या खूब फब रहा।
रंगारंग पुष्पों का
कर तू रसपान
पैदाकर मन में......।

---

1. 'बुलबुल' कश्मीरी भाषा में पुलिंग है।

चन्द्रमा

रूपसी सुन्दरी
राजकुमारी—
कार्तिक शशि !
ठहर ज़रा, बलिहारी जाऊँ
सुन मेरे मन की तू इक बात।
प्रकृति ने सौंपी तुझे
ताजदारी रात की
पग बढ़ा हौले-से
नीली गुड़िया-रानी री।
बस्तियों, वनों और पर्वतों पर
नजर डाले तू जहाँ-जहाँ
मिट जाये उजाड़ वहाँ-वहाँ।
वन की मैना री !
कहाँ तेरा घर ?
कहाँ पीहर ?
दोस्ती किससे ?
थके होंगे
तेरे पाँव।
तू भी है क्या प्रतीक्षातुर ?
दहक रहा तेरा भी हृदय
क्या प्रेम की आग में ?
दाग विरह के
क्या लगे हैं
तेरे भी सीने पर ?

1. कश्मीरी भाषा में चन्द्रमा पुलिंग है।

तारकों की तू रानी है।
एक मास में पूरी होवे
तेरी कार-गुजारी री !
शुक्ल पक्ष में
तू भासित होवे
नूर बरसाए इस लोक में
कृष्ण पक्ष में नज़र न आये
जाने कहां छिप जाये,
तू उस लोक में।
धर्म, नीति और
ईमानदारी
चली आ रही प्राचीनकाल से
पर,
बदले में उसके
चल रही आज यहाँ,
मक्कारी, प्रपंच और
ज़ोरावरी।
अग्रज हमारे सब के सब
वक्त के थे अचूक शिकारी
मतलब का शस्त्र थामे
कमजोर दिलों पर करते थे
वे चांदमारी।
अतीत था हमारा
ज्ञानगरिमा से मंडित
वतन के हम मालिक थे,
आज देख रही होगी
तू हमारी परवशता,
क्या थे हम और
क्या हो गये।
देखे तूने कितने ही
धनिक-हज़ारी,

पर टिकी न बहुत दिनों तक
उनकी यह सूबेदारी ।
नंगे पाँव चले गये
इस जग से वे सब
कभी की थी हाथियों पर,
जिन्होंने सवारी...।
सौन्दर्य की तू खान
पर,
यह सौन्दर्य भी
ह्रासमान,
आज जो है
वह कल नहीं,
'महजूर' तुझे बिठाता
सर-आँखों पर,
पर उसकी अपनी कुछ है
लाचारी—
अब 'आज़ाद'[1] लेगा
तेरी जिम्मेवारी—
कार्तिक-शीश !
सुन मेरे मन की तू बात । ◘

---

1. महजूर के समकालीन कवि अब्दुल अहद आज़ाद।

नई दुनिया

गुल नये, बुलबुल नई
नई ही इक फुलबाड़ी अब
होनी चाहिए ।
नई मदिरा, नया पैमाना
नई ही सुरबाला अब
होनी चाहिये ।
नयी धरती
नया आकाश
नया सूरज और नया
इक प्रकाश,
नई सुबह, नई शाम
नया ही एक संसार अब
होना चाहिये ।
नई दुकानें, नया लेनदेन
नए बर्तन, नया सामान
नये दुकानदार, नया व्यापार
नया ही इक व्यवहार अब
होना चाहिये ।
अब तक चले गये
अग्रज हमारे
पुराने पुलों को पार करके,
मगर
दरिया को पार
करने के लिये
नया ही इक पुल अब

बनना चाहिये।
बहुत बासी हो गयी हैं
शासन की यह
पुरानी लीकें
नया कानून
नया दफ्तर
नया ही एक दरबार अब
होना चाहिये।
पोथियों में बन्द
धार्मिक-सद्भाव की वाणी
मन की शुद्धता
वचन की गरिमा—
सब हो गये हैं पुराने,
एक नया उत्साह, नई उमंग
दिलों में अब
होनी चाहिये।
अब और कब तक
समर्थ करेंगे
शोषण असमर्थों का,
इन शोषित के
दिलों में भी
नया ही इक जोश अब
जगना चाहिये।
दिन भर जीजान खपाकर
रोटी आधी
देते हैं शाम को ये स्वामी,
थोड़े में मैं
सन्तुष्ट तो रहूँ
इन्हें भी मेरे गमों का अब
एहसास होना चाहिये।
निर्धनों के लिये तो है

एक अनार
और सौ बीमार,
एक हो बीमार
सौ हों अनार
कुछ ऐसा नया ही अब
माहौल बनना चाहिये।
करता मैं किसी के
वचनों पर
यह जान, अपनी न्यौछावर
मगर
इस वचनबद्धता के लिये
औरों के दिलों से भी अब
स्वीकारोक्ति निकलनी चाहिये।
यह ज़ुबान मेरी अगर
जिम्मेवार है मेरी कथनी की,
मेरे विचारों और भावनाओं के लिये भी
कोई अब
जिम्मेवार होना चाहिये।
नये जमाने को
देख 'महजूर'
'नया' कुछ, नया ही रंग
है दिखा रहा,
इस नये समय
नये दौर में
कुछ नया ही संवाद अब
होना चाहिए। □

हक़ का पैग़ाम

री बुलबुल !
मुदित तेरा मन
सामने तेरे गुलज़ार जो है,
रात दिन मस्ती में है डोलती
पुष्पों की तुझे चाह जो है ।
फूलों को देख-देख
गाती है,
अभी तुझ में
शौक, यौवन
सुलगती आग जो है ।
मुरझा जाएँगे, मिट जाएँगे
शबनम की तरह,
खुशबू की तरह विलीन होंगे
यह फूल ।
होश कर ज़रा
जिनके लिए हुलसित हो रही
खिलकर चले भी गये
तेरा उन्हें रहा कुछ खयाल नहीं !
दिल में अपने जिसके लिये,
तूने प्यार उमड़ाया
चैन गँवाया
वही तेरा प्रिय
निकला बेवफ़ा ।
पराग कौन चूस कर ले जाते ?
बाग का आनन्द

कौन लूट कर ले जाते ?
उस बात से
अभी तू है बेखबर
तुम्हें तो लगन लगी है, बस
गीत गाने-गुनगुनाने की।
बहेलिये ने तेरे लिये
जाल हैं बिछाए
खूब बारीक जाल हैं बनवाये
डाली के इर्द गिर्द
ये जाल हैं बिछाएँ
भोली ! तुझे लग रहा यह
पक्षियां हैं।
पेड़ पर तूने
घोंसला जो बनाया
उजाड़ कर उसे
जला देंगे ये लोग,
कल फिर छोड़ना होगा
तुझे यह बाग प्यारा
उमड़ा था जिस पर
तेरा प्यार सारा।
बोल इसमें
तुझे है क्या कुछ इन्कार ?
गुलों को देख-देख
तू हो रही है गद्-गद्
मगर इस बाग की उपज का
वह सौदागर कर रहा इन्तज़ार है।
हाथ तेरा खाली
खाली हाथ सौदे होते नहीं।
कुछ पूंजी भी तू पैदा कर
पेड़ है छायादार

तो दीर्घायु बख्शते हैं
उसे सभी,
बिन-छायादारों पर
चलती कुल्हाड़ी
गवाह इसका देवदार है।
छोड़ तू अब गीत गाना
'कुमरी' की तरह
आकाश-पाताल एक कर
स्वर में उल्लास नहीं
तू अब उदासी ला,
'हू-हू' की आवाज़ पे
हक़ का तू
पैग़ाम फैला,
पेड़ों पर बैठकर
तू कुछ ऐसे ही गीत गा
तब
'महजूर' भी तेरे संग
कुछ ऐसे ही गीत गाएगा। □

मेरा वतन है गुलशन

बुलबुल कह रही गुलों से—
यह वतन गुलशन है हमारा
हमारा वतन है गुलशन
यह वतन गुलशन है हमारा।
चहुँ ओर श्वेत पर्वत

दीवारें ज्यों संगमरमर की
बीच में जड़ा इक पन्ना
यह वतन.........।

बीच शैलमालाओं के
आसन जमाया ज्यों बहार ने
खिले शालीमार में गुलेलाला
यह वतन...... ..।

नद-नदियां 'औ' कूल-किनारे
सर-सरिता 'औ' जलमालाएँ
गाती बहार का संगीत प्यारा
यह वतन.........।

वन उपवन 'औ' गिरि श्रेणियों पर
कलियां खिली हैं हर ओर
देख इन्हें बुलबुल ने गीत गाया
यह वतन.........।

देवदार के वन, पेड़ चन्दन, के
हीमाल का वह महकता हिण्डोला
देख उन्हें गुलाब दिल का खिला
यह वतन.........।

'सुखनाग' का लहलहाता मैदान
देखा मैंने वहां स्वयं भगवान
भक्तों को दर्शन है वह देता
यह वतन.........।

प्यार में सनी यह वादियाँ
पहाड़ 'औ' बियाबन हरे भरे
अचेतन में भी उमड़े चेतना
यह वतन.........।

सिन्धुजल से धोकर तनमन
'मानसबल' का करले ध्यान,
तब हरमुख के करेगा दर्शन
यह वतन.........।

बुलबुल हुलसित गुलों से
भौंरा दीवाना नरगिस का
जन-जन मुदित है देख नज़ारा
यह वतन.........।

'महजूर' यह देश हमारा
बाग इक सलोना-सा
सब को इसने अपना है बनाया
यह वतन.........।

गीत गा नये-नये

री बुलबुल !
आज़ाद होने की
खुशियां मना
फूलों का तू ले आनन्द
फुलवाड़ी पर प्यार बरसा ।
पिंजड़े में बंद भी अब तक
सहम-सहम कर गाती थी,
दिल का हाल
निर्भय होकर
अब तू बयान कर।
पिंजरे में ही
मिल जाता था तुझे भोजन
अब वन उपवन में
घूमघाम कर
तू ढूंढा कर
अपना भोजन,
कम खाना
मगर
आज़ाद रहना
है इसमें बड़ा आनन्द ।
पहले तेरी चहक में थी
घुली वेदना की लहर
विनय से पूरित था
उसका प्रत्येक स्वर,
अब और कब तक

पंखों को अपने
तू समेटे रहेगी ?
उठ, पँख, अपने फैला
उन्मुक्त भाव से
फुलवाड़ी पर नज़र दौड़ा
इस बाग की हालत से,
रही तू अब तक बेखबर
(इस बीच)
फूल नए-नए
बहुत उगे, बहुत खिले
छोड़ अब तू राग पुराने
गीत गा तू नए-नए।
विनय 'औ' याचना के
बन्धनों को खोल दे
अब तू है
स्वाधीन।
तेरा मन अब तेरा स्वामी
तेरी वाणी, तेरी दासी।
री बुलबुल।
आजाद होने की
खुशियां मना
फूलों का तू ले आनन्द
फुलवाड़ी पर प्यार बरसा।

ज़माने से प्रीत बढ़ा

सुर बाले !
खोल द्वार
मदिरालय के,
पते की सुन ले इक बात-
भई, कुछ ज़माने से भी प्रीत बढ़ा।
जंग लगी है
चषक 'औ' पात्र पर
दूर कर उसे तू,
बिक रही मदिरा
हर दुकान पर—
हर मस्ताने के अधरों से
विश्व सारा स्वतन्त्र हो रहा
पराधीन अब देश
कोई रहा नहीं—
दीन धर्म की बातें
अब हो गयी हैं बचकानी
भई, कुछ जमाने से भी प्रति बढ़ा।
दिन तीन-चार
और मौज कर,
आगे पड़ेगा तूफानों से
वास्ता,
तब तेरे इस रंग भवन में
बसेगी यह सारी
जनता—
भई, कुछ ज़माने से भी

प्रीत बढ़ा
बहुत पहले
बुलबुल बोली थी माली से—
इस भाग से तेरी भला
क्या है बराबरी ?
जा, अब भी वक्त है
कब्जा कर ले किसी निर्जन का
और जमा
अपनी असरदारी !
'महजूर' दोहरा रहा है
पुराने तराने;
प्रेम की बातें
पुरानी यादें—
भाएगी नहीं अल्पज्ञों को
उसकी यह सदाएं ।
सुरबाले !
खोल द्वार
मदिरालय के
पते की भी सुन ले इक बात
भई, कुछ ज़माने से भी
प्रीत बढ़ा !

□

कभी चहकना कभी रोना

यह जी जान तुझ पर बलिहारी—
प्रिय, सद्गति मुझे
दिलाना तू !
दिल मेरा डूब रहा
रात की अग्नि
सुबह की शबनम
शाम का झुटपुटा
उषा की लाली
देख देख
कलियाँ हो रही परेशान
प्रिय, सद्गति मुझे
दिलाना तू ।

ऊंची-सी डाली पर
था मेरा आशियाँ,
अंधेरी रात में
बिजली ने जिसे जला दिया।
माली समझ बैठा
इसे चरागाँ,
प्रिय, सद्गति मुझे
दिलाना तू ।

प्रेमाग्नि में
लिपटी थी आपाद-मस्तक मैं
तपकर कुंदन भई,
जाने क्यों

ये सखियाँ सारी
डरा रही थीं यों ही—
प्रिय सद्गति मुझे
दिलाना तू।

मन जिसका हो अविकार
उसके लिये
क्या आषाढ़ ?
क्या तुषार ?
शुष्क-हृदय जाने क्या
सुगन्ध भरी हवाएँ ?
प्रिय सद्गति मुझे
दिलाना तू।

फूल का यौवन
बस, थोड़ा-सा,
पड़ ही जाता
झंझा से
उसका वास्ता
धूल में है
सब को मिलाता—
प्रिय सद्गति मुझे
दिलाना तू।

बुलबुल बोली फूल से
क्या कहने तेरे
अपूर्व लावण्य के !
बस
कसूर तेरा है यही
बेज़ुबान, ज़िन्दा यहां
रहते नहीं
प्रिय सद्गति मुझे
दिलाना तू।

कभी चहकना
कभी रोना
कभी गीत
कभी प्रलाप—
ज़िन्दगानी है यही,
प्रिय सद्‌गति मुझे
दिलाना तू ।

गुल-खिले सुबह
मुरझाये-शाम को,
बुलबुल करे प्रतीक्षा
देखने अंजाम को—
मेजबान बुलबुल
तो मेहमान गुल
प्रिय सद्‌गति मुझे
दिलाना तू ।

'महजूर' बन
वासंती समीर
हौले-हौले बाग़ में
पग बढ़ा,
आलस्य मिटाकर
उनींदी आँखों को जगाता जा
प्रिय सद्‌गति मुझे
दिलाना तू । □

चपला रानी

सुन्दर-सुष्ठु तन पर तेरे
पहनाए किसने
वस्त्र रतनारे ?
देह अपनी
दिखा दे पूरी
ज्योतिर्मयी चपला रानी री !

सौन्दर्य बिखेरा
'अहरबल' के ऊपर,
धूम मचायी
ग्राम 'औ' नगर में
प्रेमरस बरसाती
'खनबल' से गुजरी
देह अपनी
दिखा दे पूरी
ज्योतिर्मयी चपला रानी री !

आकृति तेरी
टेढ़ी-मेढ़ी
रूपसी की लट समान,
गर्दन पीछे
पुष्प बेल सोहे
सुनहली अलकें
होवे प्रकाशमान
देह अपनी
दिखा दे पूरी
ज्योतिर्मयी चपला रानी री !

सांध्य बेला में
मेघवसन पहने
लौट आए ज्यों ससुराल तू
मुड़-मुड़कर
पीछे को मुड़ती
याद करे
पीहर को तू ?
देह अपनी
दिखा दे पूरी
ज्योतिर्मयी चपला रानी री !

देती दर्शन
पर्दे के पीछे,
एक नज़र में
तक जाती सारा संसार,
नजर ढाल
फिर कहाँ
छिप जाती ?
देह अपनी
दिखा दे पूरी
ज्योतिर्मयी चपला रानी री !

राही जो भटके
अंधियारे में
पल-पल में मार्ग तू उन्हें दिखाए
तेरे प्रकाश का
मोल न लगे कोई
ऐसी मशाल तू चमकाए,
देह अपनी
दिखा दे पूरी
ज्योतिर्मयी चपला रानी री !

भाग्य 'महजूर' का
रूठा सदा
साथी जो मिले
सब अनाड़ी मिले,
मोतियों को कहा ढेले—
देह अपनी
दिखा दे पूरी
ज्योतिर्मयी चपला रानी री ! □

तुझ पर तन मन मैं वारूं

विरह में विकल हूं
पीड़ा हर मेरी
आ
तुझ पर तनमन मैं वारूँ
दो नयनों में बसा लूं
तुझ पर तनमन मैं वारूँ

विरह ताप से तप रहा
तन है मेरा,
बिछोह में विकल हो रहा
भावुक मन है मेरा,
भूल जा प्रिय
अब मिले पुराने
आ
तुझ पर तन मन मैं वारूँ।

क्यों भला
रहने लगा तू दूर-दूर ?
दूरी तेरी, तनमन को
कर रही चूर-चूर ।
ख़ता क्या हुई
जो ठेस तेरे दिल को पहुँची ?
आ
तुझ पर तन मन मैं वारूँ।

फूलों से खेली मैं
बस, दिन दो चार,
अरमानों में बिंध गया विरह का शूल
पतझर बना मधुमास
मुरझा गये सब फूल,
आ
तुझ पर तनमन मैं वारूँ ।

परायी प्रीत में बंध गया
तू जब से
सखियां मुंह चिढ़ाती हैं
तब से
लोकनिंदा, जग की बातें
सुनने के लिये
अकेला मुझे छोड़ दिया
आ
तुझ पर तन मन मैं वारूँ ।

यह चढ़ती जवानी मेरी
और
रिझा कर
भुला देने की आदत तेरी,
क्यों रही न प्रीत
रत्ती भर भी मेरी
आ
तुझ पर तन मन मैं वारूँ ।

रूप फबीला
देह प्यारी
देख स्वर्ग की
अप्सराएं हुई दीवानी
सकल संसार में

छवि तेरी न्यारी
आ
तुझ पर तन मन मैं वारूँ

विरह में तेरे
रात दिन हूँ कलपती,
फिर भी दिल तेरा पसीजा नहीं
क्यों हो गये विमुख
मुझ से रे बेदर्दी ?
आ
तुझ पर तन मन मैं वारूँ ।

प्रीत कर भुला देना
रीत नहीं है यह कोई,
मुझे तो अब भी, प्रिय
लगन है तेरी;
आ
तुझ पर तन मन मैं वारूँ । ☐

मीत मेरा कहाँ गया ?

सखि कहाँ गया ?
बालपन का वह मीत मेरा
वह दिल का करार मेरा
गले का वह हार मेरा
वह दिल का करार मेरा
जाने कहाँ गया ?

यौवन की गति
तेज़ थी मेरी
चलती गयी मैं अविराम,
हुआ क्या हासिल मुझे ?
गन्तव्य पर पहुँचने से पूर्व ही
हो गयी मेरी शाम !
वह बचपन कहाँ गया मेरा ?
वह दिल का करार मेरा
जाने कहाँ गया ?

हेमंत के इक झोंके ने
आशा-तरु को ध्वस्त किया
गूंगे हो गये कस्तूर[1]
और मुरझा गये फूल,
कुसमित वसंत वह पहले जैसा
हाय कहां गया ?
वह दिल का करार मेरा
जाने कहाँ गया ?

---

1. **कस्तूर**—कोयल के रंग का पंछी जो मीठा गाता है।

ढूंढते उसे थक गये
मेरे ये कोमल पाद
यह चढ़ती जवानी
प्रिय, अब हो रही बर्बाद,
निठुर-निर्दयी मीत मेरा
कहाँ गया ?
दिल का करार मेरा
जाने कहाँ गया ?

शौक से मंगवायी थी
मदिरा विदेसी,
तन मन पर छा गया
वह बालम परदेसी,
प्रेम-मदिरा छकाकर
वह मेरा खुमार
कहाँ गया ?
दिल का करार मेरा
जाने कहाँ गया ?

कल तक उसे था
मेरा प्रेम खूब स्वीकार
पर, आज उसने खुद ही
कर दिया है इन्कार,
इस हालत पर पहुँचने से पहले
हाय, विवेक मेरा
कहाँ गया ?
दिल का करार मेरा
जाने कहां गया ?

□

प्रेमाहत तन मेरा

आज रहना यहां
प्रिय, मेरे यहां ।

थाली सजायी है
प्याली भरी है
लगन लगी है
आज रहना यहाँ
प्रिय मेरे यहां !
रूप जो दिखाया

दिल को भरमाया,
लैला जान निछावर
तुझ पर कर रही है
रहना यहां
प्रिय मेरे यहां !

घड़ी-भर के लिये
रुक तो जाना
मेरे दिल की बात
सुनते जाना
पद्मनी सरीखा
मेरा सलोना रूप है
आज रहना यहाँ
प्रिय मेरे यहाँ ।

पीड़ा बुलबुल की
बिछोह प्रेमी का
गुल क्या जाने ?

दुःख की यही बात है
आज रहना यहाँ
प्रिय मेरे यहाँ !

प्रेमाहत तन मेरा
जीर्ण जो हो भी गया,
पुराना होगा नहीं,
पते की यह बात है—
आज रहना यहाँ,
प्रिय मेरे यहाँ ।

शबनम ने प्रिय
मोतियों का यह हार
प्यार में तेरे लिये
किया है तैयार,
पहनाना इसे तुझे
आज रहना यहाँ
प्रिय, मेरे यहाँ ।

बिछोह सहना
अग्नि में तपना
प्रिय क्या यही लिखा
मेरी किस्मत में है ?
आज रहना यहाँ
प्रिय, मेरे यहाँ ।

महजूर के संग
वादा अपना
मैंने निभाया,
लोक के ताने
खूब झेल लिये हैं
आज रहना यहाँ
प्रिय, मेरे यहाँ ।

पीड़ाओं का बाग

सखि, बोल तो
पीड़ाओं के बाग में
बहार छायी होगी क्या ?
प्यार की बहार का
देखने मेरा साजन (घर से)
निकला होगा क्या ?
सुबह की बयार
जगाये उनींदी कलियों को
प्रेम लुटाने को
वह मेरा बुलबुल[1]
क्या मालूम
तैयार हो गया होगा क्या ?
जर्जरित 'मसवल[2] कह रही
बयार से—
आँचल जिसने मेरा धोया
उसे भी कभी
मन का करार
मिलेगा क्या ?
बाग में एकाकी पड़ी
दर्द व्यक्त कर रही हूँ,
दिल के उस गुलाब के सन्मुख
पीड़ा व्यक्त करने का
अवसर कभी मिलेगा क्या ?

---

1. **'बुलबुल'** कश्मीरी में पुंलिग है।
2. **पष्प विशेष**

पंख काट कर छोड़ दिया
आततायी ने चमन के बीच,
लस्त-पस्त लोट रही
मेरी तरह
कहीं कोई
पक्षिणी होगी क्या ?
पर—मदिरा पर हुआ
वह आसक्त
विरुद्ध मेरे
किसी ने जरूर कुछ कह दिया ।
नहीं तो
अकारण ही
उसकी आँखों में
वितृष्णा होनी क्या ?
खूब बोली थी मैं
घड़ी भर के लिये रुक जाना
बातें दोचार करके जाना,
निर्दयी बोला—
सुनूंगा कहाँ तक
शिकायतों का
कोई शुमार होगा क्या ?

दीन हीन बनाकर छोड़ गया

घावों से तनमन
छलनी कर
विरह में तपता
छोड़ गया
हृदय में प्रेम का
गहरा निशान
निष्ठुर जाने कब
बना गया ?
याद जब आयी उसकी
अश्रुधारा प्रवाहित हुयी
खुद नाव में बैठ
मुझे बाढ़ में धकेल गया।
छीन ले गया
भरमाकर,
सब्र दिल का
तनमन का आराम,
छिपाया दिल का दर्द जितना
रहस्य उतना प्रकट,
हो ही गया।
आशिक़ वह जो
आग से खेले—
सिखाई थी उसने यह बात,
जीवन गुज़ारना
कुछ ऐसे ही,

बात समझाकर
खुद चला गया !
दीन हीन बना कर छोड़ा
किसे कहूँ अपना हाल ?
प्यार के झकोरे से
मोतियों की माला
तोड़कर
वह चला गया ।
बुलबुल क्यों फरियादती,
बयार सुबह की
क्या जाने ?
जल्दी आकर
जल्दी ही
दामन झटक कर
जो जाए ।
'महजूर' न वह
मद्य न मद्यप
न साकी ही
फिर भी बातें सुन उसकी,
आलम सारा
मस्ताना बन ही गया

काश ! प्रिय आ जाता

प्रिय आ जाता !
सलोनी छवि
दिखा जाता ।
प्रेम की अग्नि में
दहक रहा
वक्ष मेरा
गिला छोड़
मन का करार वह
दिला जाता ।
उसे व्यथा सुनाती
दया जगाती
जो आता वह
कर के कृपा ।
प्यार बरसाता
अंग लगता
अपना बनाकर
दोष मेरे
क्षमा कर देता
निर्दयी
इक बार जो आता
गले से लिपट कर
दिल का हाल मैं सुनाती,
पीड़ा सुन मेरी
दिल को ठंडक
पहुँचाता वह बेदर्दी ।

होकर विह्वल
प्रेम में उसके
बाग मैंने खूब सजाया
सुन्दर-सलोना प्रिय मेरा
'ही' और 'मसवल का ?
आनंद ले लेता।
पीड़ा अन्तर की
मैं कहूँगी किसे ?
दिल में घाव
खूब हैं लगे।
गिला छोड़
वह निर्मोही यदि आ जाता
वक्ष में छिपी
पीड़ा वह खुद देख जाता।
प्रिय को पत्र भेजूँगी
रक्त से लिखकर आज
मेरी सुनकर
पीड़ा हर कर
प्रेम की गुत्थी
सुलझा वह देता।

यौवन मेरा

छल करके
दूर हुए
छली प्यारे,
नव-बहार के दूत !
शैशव न्यारे।
यौवन मेरा था
वासंती बयार
जलवे से अपने
जगत् का किया श्रृंगार
पर
पुष्पों पै मस्ती
दो-चार दिन तक ही रहे
नव-बहार के दूत
शैशव न्यारे !
यौवन मेरा था
वन में उगा इक देवदार
दरिया-किनारे
खिला ज्यों सब्ज़ाजार
उसे
काट मत देना
निर्दयी लकड़हारे !
नव-बहार के दूत
शैशव न्यारे।
यौवन मेरा था।
केल का अंगार

दहके झमझम
वह ज़ोरदार।
चेत गई मैं
जब हो गई बेदार,
देख न पाऊँगी
दुबारा उसे
नव बहार के दूत
शैशव न्यारे।
यौवन मेरा था
बाग का इक पंछी
डाल पर गाए।
हिय को दुलारे,
पर
बहेलिए ने तीर पर
तीर चलाएं
नब बहार के दूत
शैशव न्यारे।
यौवन मेरा था
महकता इक गुलज़ार
खिले थे उसमें
अनार-पुष्प बेशुमार
मगर
पतझर की हवा ने
सितम खूब ढाए
नव बहार के दूत
शैशव न्यारे!
राह पै बैठी
जुलैखा
है आँखें बिछाए
यौवन का राजा
यूसुफ़

जाने कब आए !
एक बार आकर
वह
जाने न पाए—
नव-बहार के दूत
शैशव न्यारे !
'महजूर को
याद आए
बचपन का मीत,
अब तो दोनों
छिन गये
यौवन 'औ'
बचपन की प्रीत ।
दूर न जाना कहीं
बचपन के
मीत मेरे—
नव-बहार के दूत
शैशव प्यारे !

दूर न जा प्रिये !

गोद में लेकर
तुझे झुलाऊँ
दूर न जा प्रिये,
आ, आँखों में बसाऊँ !

रूप की तेरी
चर्चा जो चली
सुनकर दिल की
कली ज्यों खिली,
दौड़ कर गया
दर पै सिर मैं धराऊं
दूर न जा प्रिये
आ, आँखों में बसाऊँ !

एक ही नज़र में
आशिक हुआ धराशायी
आसमान से गिरा
चेहरे पर मुर्द्धनी छायी,
प्रेमिल तन को
किया राख तूने
अब नज़रें कैसे बचाऊं ?
दूर न जा प्रिये
आ, आँखों में बसाऊं !

रूपहली छटा पर से
अब गुंठन अपना हटा दे
छिपने में सार क्या ?

एक झलक दिखा दे
आशिक है रूप-दीवाना
तुझे पलकों में छिपाऊं
दूर न जा प्रिये
आ, आ आँखों में बसाऊं।

शीरीं तू अति रूपसी
अद्वितीय है तेरा जमाल,
मनोहारी कंठ में
लसै मोतियों की माला
स्वर्ग की तू अप्सरा
बिन तेरे
मैं छटपटाऊं
दूर न जा प्रिये,
आ, आँखों में बसाऊं!

चाँदनी के अंतिम प्रहर में
निकली जब पनघट पर
दबाए बगल में
रूप की कमान,
लक्ष्य साधा
चितचोर को आहत किया
उस मुद्रा को
कैसे भुलाऊं?
दूर न जा प्रिये
आ, आँखों में बसाऊं!

'महजूर' कर रहा
केवल तेरी कामना,
हर इच्छा पर
जान है छिड़कता
बालपन का

मीत प्यारा
अब तो
वादा पूरा करे,
तू आए तो मैं
दिल का दर्द सुनाऊँ ।
दूर न जा प्रिये !
आ, आँखों में बसाऊं ।

कृषक-बाला

चिरंतन उद्यान की कली प्यारी
कृषक-बाला वह सुंदरी,
हीमाल स्वर्ग की, काकेशस की परी
कृषक-बाला वह सुन्दरी ।

आज़ाद वन में
खिली इक डाली
सुवासिनी, रस में पगी
आभा बख्शी किसने सतरंगी ?
कृषक-बाला वह सुन्दरी !

सीधे
सादे वस्त्र
उस रूपसी के
न है गोटा न ज़री
मेघ से निकसे ज्यों कार्तिक शशी
कृषक-बाला वह सुन्दरी

ऊंचाइयों पर जब वह गाती
देती देवबालाएँ उसे शाबाशी,
चंग-साज़ बजाती
क्या खूब वह 'ददरी' ।
कृषक-बाला वह सुन्दरी ।

कबूतरी वह मदमाती
चहकती चिड़िया रंगीली
समीप चश्मे के

खिली ज्यों 'बबर' सुंगध भरी
कृषक-बाला वह सुन्दरी।

कुल बनिताएं क्या करें
बराबरी भला उसकी
परदे में जो सदा है रहती
गुलों की रानी वह सुमन परी
कृषक-बाला वह सुन्दरी।

हया भरी उसकी आँखें पनीली
गैरत में हैं खूब सनी
तारीफ इन आँखों की
हूरों ने भी खूब करी
कृषक-बाला वह सुन्दरी।

तले स्वेद कणों के
टेढ़ी भौंहें खूब सोहें
देख जिन्हें कितने ही लुट जाएं
होश उड़ाए वह रस की गगरी
कृषक-बाला वह सुन्दरी।

शहजादी गुलों की!
सांसारिकता से रहना दूर
आलस्य में न पड़ना
मस्ती मत गंवाना, रूपेश्वरी,
कृषक-बाला वह सुन्दरी।

□

अर्थ ढूँढ ले

लो, अन्धकार मिटा
प्रकाश फैला
हुआ प्रदीप्त 'लाला',
शैल-मालाएँ भासित हुई
शिखरों का रंग
हुआ सुनहला ।
बाग के 'रेंज़ल'
बहेलियों को
कर देंगे खत्म,
अब निर्भय होकर
फैला पंख
(री बुलबुल !)
भूल जा सबग़म ।
आगे से पालेंगे सभी
तेरा ही धर्म ।
पतझर के वार को
सहेंगी फूलों की डालियां,
आएगा वसंत जब
लेगा खबर सबकी तब,
कष्ट जिसने खूब सहे ।
फूला-फला यहाँ वही
पेड़ जो हद से
ज्यादा उगे,
माली उनकी डालियों को
बेरहमी से तराश दे,

समय के संग
अपने ख़यालों की
तू रक्षा कर।
(समय आएगा अनकरीब)
जलाएँगे गूले-लाला ज्योत
प्रेम की,
छिटकेगा, प्रकाश
और रोशन होगा
सारा आकाश।
मस्त 'यम्बरज़ल'
प्यालों में उंडेलेगी
मदिरा की शबनम।
'महजूर' की मिसालों का
तू स्वयं अर्थ ढूँढ,
रहस्य प्रकट करेगा
स्पष्ट-वाचन,
प्रबुद्ध बात को समझ जाएगा, पर
बात टाल जाएगा
मतिमंद आदतन।

प्रतीक्षा करूँगी

दिल तूने जलाया
रे दिलबर
आहिस्ता-आहिस्ता।

छलनी किया
जिगर मेरा
आहिस्ता-आहिस्ता।

रात एक बिताता
मेरे यहाँ
घड़ी-भर को टिकता
मेरे यहाँ,
दिल खोलकर
बातें मैं करती
रे निर्दयी
आहिस्ता-आहिस्ता।

घुप अन्धेरे में
निकले तुम
राजसी वस्त्र पहनकर
सांझ की छाया में
चल दिए फिर
रे निर्मोही
आहिस्ता-आहिस्ता।

प्रतीक्षा करूँगी
चमन में मैं

पौष और माघ में
शायद गुल खिलें दुबारा
रे बेदर्दी
आहिस्ता-आहिस्ता ।

प्रेम-मदिरा के
घूंट पिलाकर
मस्ती में मुझे डुलाया,
गये किधर अब ?
रस चूसकर मेरा
रे हरजाई
आहिस्ता-आहिस्ता ।

आ जा मीत मेरे
जान वारूं मैं तुझ पर
सामान सजाए हैं
भाँति-भाँति के
बिन तेरे
जलवे यह सारे
पड़ रहे हैं फीके
रे साजन
आहिस्ता-आहिस्ता ।

आता रहे
यदि सपनों में बराबर,
दूरी तेरी
सह लूंगी मैं रीझकर,
प्यार के इस
रबाब की तारें
तू बाँध ले
रे बालम
आहिस्ता-आहिस्ता ।

प्रेम बेचा, ग़म मोल लिया

रे गुलो !
देखा क्या
प्रिय मेरा ?
बुलबुलो !
अब तुम्हीं ढूंढ लेना
प्रिय मेरा।

पूछा फूलों से
'यम्बरज़लों' से,
आया वह
तुम्हारे पास तो नहीं
सलोना मीत
वह जादूगर मेरा।

होकर कुसमित
अनार-पुष्पों ने
बाग को रंजित किया,
प्रकट हुआ ज्यों
आम के रूप में
प्यार हो मेरा।

आना चुपके से
पुष्प बाग को देखने
करके कोई बहाना,
तेरे आने से, प्रिय
खिल उठेगा यह
गुलज़ार मेरा।

☐ प्रेम-पीर

झेल रही हूँ
निर्मोही को क्या खबर ?
अन्जाने में ही
व्यर्थ जा रहा
उल्लास है मेरा।

'ही' पुष्प की तरह
गुज़ार दी यह ज़िंदगी,
कोमल डाली को
कभी अखरा नहीं
तन मन का यह
भार है मेरा।

यही आशा अटकी रही
प्रिय आएगा
आजकल में ज़रूर
बस, यही सोचते-सोचते
बीत चला
यौवन है मेरा।

सौदा किया
ऐसा मैंने
प्रेम बेच ग़म
मोल लिया मैंने,
इसी प्रण पर चला
व्यापार है मेरा।

'महजूर' दिल टूटकर
कह रहा
यह बात,
निष्ठुर के मन में
जागा नहीं कभी
दयाभाव मेरा।

□

दीवानी मैं तेरी

मन में बस गई
इच्छा है तेरी
अधीर कर रही
प्रिय, अदा है तेरी ।

होश उड़ाए
रे चितचोर !
तिरछी नज़र ने तेरी
भूल न पाऊंगी चाहत
प्रिय अब मैं तेरी ।

अपनों से वादा और
परायों में जा बैठना,
बोल, किधर है मन
जाने का ?
प्रिय, बता क्या मर्ज़ी है तेरी ?

त्याग दे
इस हृदयहीन बस्ती को,
आ, मित्रों के गांव में
सुहाएगा मित्रों में,
अपनों में जगह है तेरी ।

सुबह की हुलसित बयार
पहुँची फूलों के पास
है यह तकाज़ा
तेरे प्यार का, या
प्रिय, विशेषता है तेरी ?

जग के ताने
क्या करेंगे उसका
प्रेम की अग्नि संजोए
दीवानी बनी जो
प्रिय, है तेरी।

'महजूर' सुनकर
तेरे रूप की चर्चा
बस्ती में कोलाहल मचा,
बात फैली जंगल-जंगल
प्रिय, रूप की तेरी

प्रेम में विकल हूँ

घड़ी भर के लिए
रुक जाना
कदम तू धीरे से बढ़ाना
रे दिलदार
दर्शन दे जाना ।

दुराग्रह छोड़
नज़र डाल प्रेम भरी,
संताप हो दूर
मन की कली खिले मेरी,
जलने के निशान
प्रिय, मिटा जाना —
रे दिलदार
दर्शन दे जाना ।

प्यार के तीर तेरे
खूब सहे मैंने,
यह घाव किसी को भी
मैंने न दिखाए,
प्रिय, घावों पै
मलहम लगा जाना
रे दिलदार
दर्शन दे जाना ।

रूप का
तू धनी-मानी,
धनी अक्सर

होते हैं अन्यायी,
रे निर्दयी, क्रूर
मुझे मार मत देना
रे दिलदार
दर्शन दे जाना ।

'डल'[1] में हिलोर रहा
उत्साह असीम है,
इत-उत खिले
असंख्य कमल हैं,
'ज़ठयार'[2] में रोक नाव को
'गुपकार'[3] में मिलने आ जाना
रे दिलदार
दर्शन दे जाना ।

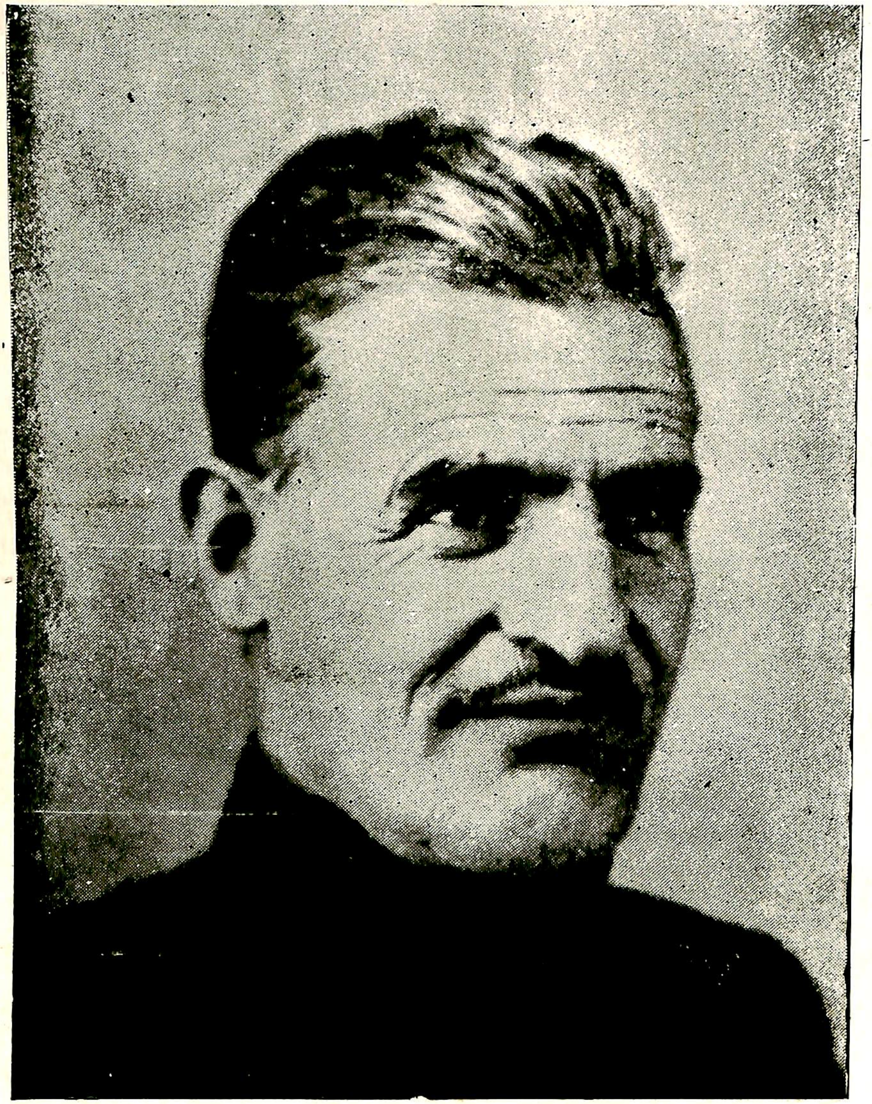
प्रेम में हूं विकल
कुछ और न चाहिए,
पैरों में खड़ाऊं
माला हाथ में है,
तेरे सिवा
जोगन को क्या माँगना
रे दिलदार
दर्शन दे जाना ।

'महजूर' विज्ञ तो नहीं
कैसे कहे प्रिय के
आने की,
प्रेम को हृदय में छिपाए
मन को है
ऐसे ही मनाना
रे दिलदार
दर्शन दे जाना । □

---

1. कश्मीर की प्रसिद्ध डल झील 2-3 डल झील के किनारे स्थान-विशेष ।

महजूर । खुश मिजाज़ खुश कलाम



(11 अगस्त 1887—19 अप्रैल 1952)